ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 7, Issue 7, July 2017Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

आधुनिक भारत के निर्माण में जवाहर लाल नेहरू की सामाजिक और आर्थिक विचारधारा

[1]कविता, [2]डॉ॰ दीपक सिंह
(इतिहास विभाग)

[1,2]श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
(उत्तर प्रदेश) भारत

सार

सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के सम्बन्ध में नेहरू का दृष्टिकोण वैज्ञानिक था। उनकी भारत को आधुनिक राष्ट्र बनाने की तीव्र अभिलाषा थी और इसीलिये उन्होंने ऐहिकवाद का समर्थन किया और दे"ा के औद्योगीकरण व प्रविधिक प्रगति पर बल दिया। उन्हें तत्व"ाास्त्रीय समस्याओं में रूचि नही थी और न उन्हें पंसद था कि सामाजिक और आर्थिक विचारों को धार्मिक रहस्यवाद की आलंकारिक भाषा में व्यक्त किया जाय। वे चाहते थे कि सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने और समझने का प्रयत्न किया जाय।

प्रस्तावना

वास्तविक भारत अपने गांवों में रहता है जवाहरलाल नेहरू इस तथ्य को भली भॉति जानते थे। वे ग्राम्य जनता की समस्याओं को भली भॉति जान गये थे। वे समझ गये थे कि भारत सामाजिक समस्याओं का समाधान किये बिना आधुनिक भारत का निर्माण सम्भव नही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के निकट सम्पर्क में रहते हुये वे गाँधी के ग्रामोद्धार कार्यक्रम और ग्राम स्वराज्य की धारणा से भी अवगत हो चुके थे। जवाहरलाल के सामाजिक आद"ार्ा की मूल भावना भी बहुत कुछ वही है जो गाँधी जी के रामराज की थी। यद्यपि उन्होंने स्पष्ट किया कि व गाँधी जी की अहिंसा के उच्च मानदण्ड के अनुरूप नही है। सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु जवाहरलाल नेहरू ने लोककल्याणकारी राज्य की विचारधारा और सामाजिक सुधारवाद की विचारधारा को अपनाया। इन्हें अपनाने का उद्दे"य जनगण की दरिद्रता को दूर करना, उनके रहन–सहन के स्तर को ऊँचा उठाना सामाजिक न्याय की व्यवस्था करना और समाज से शोषण का अंत करना था। नेहरू की इस सामाजिक विचारधारा के मूलतत्व है।

नेहरू की सामाजिक विचारधारा

(क) सामाजिक विरचना का आमूलतः रूपांतरण – नेहरू भारतीय मुक्ति आंदोलनके उनपहले नेताओ में से एक थे, जिन्होंने श्रमिकों व जनसाधारण की हालत में सुधार करने के कार्यभार को परोपकारिता का, अपने पड़ोसी के प्रति चिंता का या राष्ट्रीय एकजुटता का आह्वान करके नहीं, वरन् सामाजिक विरचना को आमूलतः रूपांतरित करने, समाजवाद की दि"ाा में बढ़ने की आव"यकता के आधार पर निरूपित किया। 1929 में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवे"ान में उन्होंने कहा कि भारत में समानता की समस्या को हल करने के लिए कोई समाधान नहीं

पाया गया है, कि ''भारत ने इसे जानबूझकर नजरअंदाज किया तथा असमानता के आधार पर अपनी सामाजिक संरचना बनायी है।'' उन्होंने खुले तौर पर घोषित किया कि वह समाजवाद के पक्षपोषक हैं, भले ही वह यह महसूस करते थे कि कोंग्रेस ''एक पूर्ण समाजवादी कार्यक्रम'' स्वीकार नहीं करती। उन्होंने राजओं के विरूद्ध और उस ''व्यवस्था'' के विरूद्ध भी आवाज उठायी, ''जो उद्योग के आधुनिक राजा पैदा करती है, जो लोगों के जीवन और भाग्य पर पुराने जमाने के राजाओं से भी ज्यादा सत्ता रखते है, और जिनकी विधियां उतनी ही लुटेरू हैं, जितनी कि पुराने सामंती अभिजात वर्ग की थी।''

(ख) सामाजिक अन्याय का विरोध – समाजिक अन्याय दूर करने के लिए नेहरू ने जनवादी, शांतिपूर्ण, अहिंसात्मक विधियों के प्रयोग से इंकार नहीं किया। उन्होंने उल्लेख तक किया कि अहिंसा के सिद्धांत के अधिभूतवादी पहलुंओं का, उसकी पूर्ण व्यवहार्यता के प्र"न का ध्यान किये बिना साम्राज्यवादविरोधी आंदोलन में भारतीय राष्टोय कांग्रेस की गांधीवादी नीति ने ''भारत में नागरिक टकराव के विरूद्ध और विभिन्न ग्रुपों को जीतने (जनवादी शक्तियों की तरफ–ओ0 म0) के प्रयास के पक्ष में जबर्दस्त भावना पैदा कर दी'' और भारत की एकता को बनाये रखने और विपक्ष को दुर्बल करने का एक बड़े महत्व का कारक'' बन गयी।

फिर भी गहन वर्ग अंतर्विरोंधो ने सामाजिक अन्याय दूर करने की सांविधानिक तथा अहिसात्मक विधियों की कारगरता के संबंध में नेहरू के मन में संदेह पैदा कर दिये। यह, उनके अनुसार, इन विधियों का प्रयोग करने की शोषित जनों की अनिच्छा के कारण ही नहीं, बल्कि शोषकों के दुराग्रह तथा सभी संभव साधनों से अपने हितों की रक्षा करने के उनके दृढ़नि"चय के कारण भी था। ''मेरा ख्याल है कि सैद्धांतिक तौर पर जनवादी साधनों से समाजवाद की स्थापना करना संभव है, ब"ार्ते कि पूर्ण जनवादी प्रक्रिया उपलब्ध हो,'' नेहरू ने 1936 में लिखा। ''लेकिन व्यावहारिक तौर पर बड़ी कठिनाइयां हो सकती हैं, क्योंकि समाजवाद के विरोधी जब देखेंगे कि उनकी सत्ता खतरे में हैं, तो जनवादी विधि को ठुकरा देंगे। जनवाद से इंकार समाजवादी पक्ष से नहीं आता, न ही आना चाहिए, वह विरोधी पक्ष से आता है। यह बे"ाक फासिज्म है। जनवादी विधि को कई जीतों का श्रेय है, लेकिन मैं नहीं जानता कि वह राज्य या समाज की मूल विरचना संबंधी टकराव के समाधान में अभी सफल हुई है। जब यह प्र"न उठता है,तो राज्य सत्ता को नियंत्रित करनेवाला ग्रुप या वर्ग उसे स्वेंच्छा से इस वजह से नहीं छोड़ता कि बहुसंख्या इसकी मांग करती है।''

(ग) शोषण का विरोध करना – नेहरू ने अपनी समाजवादी विचारधारा के चलते हरतरह के शोष्ण का विरोध किया। नहेरू ने मुक्ति संघर्ष में विभिन्न वर्गो की भूमिका के बारे में पूर्ववर्ती कुछ वर्षो के विचारों का निचोड़ प्रस्तुत किया। ताल्लुकेदारों की छाया संबंधी नेहरू का निंदात्मक हवाला कोई संयोग की बात नहीं थी। कुछ शर्तों के साथ यह मूल्यांकन भारतीय पूंजीपतियों सहित सामान्यतः सभी शोषक वर्गो पर लागू हो सकता था। नेहरू ने भारत के तथाकथित मध्यम वर्ग में से दो ऐतिहासिक संस्तरों को चुना। पहला संस्तर वकीलों, डाक्टरो, आदि जैसे विभिन्न पे"ाों के लोगों और सौदागरों तथा व्यापारियों से बना था। यह नया बुर्जुआ वर्ग या मध्यम वर्ग, नेहरू, के अनुसार, ''ब्रिटि"ा शासन की सीधी उपज'' और एक अर्थ में ''इस शासन का पिछलग्गू'' था।16 नवधनिक बुर्जुआ वर्ग फैक्टरी उत्पादन में पूंजी लगाने लगा और इस तरह भारतीय भारतीय औद्योगिक पूंजीपतियों के वर्ग का गठन शुरू हुआ। यह 1880 के बाद हुआ।

यद्यपि प्रतीत होता था कि भारतीय औद्योगिक पूंजी औपनिवे"िाक प्र"ाासन के साथ मुनाफों के स्रोतों के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से नही जुड़ी हुई थी, फिर भी वह ब्रिटेन पर काफी निर्भर थी। 1928 मे नेहरू ने कहा कि भारतीय पूंजीपति ब्रिटि"ा पूंजीपतियों से सघनतः से जुड़े हुए थे (उनके अनुसार,भारतीय उद्योग में निवे"ित पूंजी का 90 प्रति"ात अंग्रेजो का था और सिर्फ 10 प्रति"ात ही भारतीयों का था, जबकि पूरे का पूरा बैंक व्यवसाय अंग्रेजों के हाथों में था, जिसके जरिये वे किसी भी उद्यम का दिवाला निकाल सकते थे) और इसलिए वे ब्रिटि"ा हितों के विरूद्ध एक बड़ी हद तक नहीं जा सकते थे। उनके विचार में, सामाजिक वि"लेषण से प्रकट था कि भारतीय समाज के कई वर्ग अंग्रेजों के विरूद्ध नहीं लड़ सकते थे। ये, नेहरू के अनुसार, बड़े जमींदार थे, जो अपने अस्तित्व से ही औपनिवे"िाक सत्ता से बंधे हुए थे। उन्होंने बुर्जुआ बुद्धिजिवियों के निम्न संस्तरों की स्थिति तक को अंतर्विरोधी पाया।

उनका ख्याल था कि उनके बहुत–से सदस्य क्रांति या आमूल परिवर्तन नहीं चाहते थे। नेहरू ने भारतीय सूती मिल मालिकों की लोलुपता की भी चर्चा की, जिन्होंने ब्रिटि"ा वस्त्रों के बहिष्कार तक को अपने को समृद्ध करने के लिए इस्तेमाल किया। खादी को नकल करने के लिए अपने विद्युतचालित करघों का प्रयोग करते हुए उन्होने जितनी ब्रिटि"ा उद्योगपतियों से प्रतिद्वंद्विता नहीं की, उतनी भारतीय दस्तकारों से की।

(ड.) वर्ग सामंजस्य का समर्थन – नेहरू ने सामाजिक समस्या के समाधान के वर्ग सामंजस्य का पक्ष लिया है। लेकिन अब वर्ग संघर्ष उन्हें वांछित दि"ाा में वि"व के कायापलट का एक साधन कदापि नहीं प्रतीत होता था। उन्होंने कहा कि मैं ''वर्ग

संघर्ष को स्वीकार करता हूं'' (उन्होंने 1954 में कहा) लेकिन मैं इसे बढ़ाना नहीं चाहता। मैं इससे सम्मोहित हो जाना नहीं चाहता। संघर्ष को बढ़ाये बिना मैं यथासंभव इससे बचना चाहता हूं।33 यह कथन वर्ग संघर्ष की उनकी स्वीकृति के औपचारिक स्वरूप को प्रदर्"ित करता है।

नेहरू ने वर्ग संघर्ष को एक तथ्य, एक परिघटना के रूप में बिल्कुल वैसे ही स्वीकार किया, जैसे कि भुखमरी, गरीबी, ब्रिटि"ा शासन और पूंजीपतियों की लोलुपता को। लेकिन अब वह वर्ग संघर्ष को क्रांतिकारी परिवर्तन की एक विधि के रूप में नहीं देखते थे। उल्टे, वर्ग संघर्ष, उनके नव–दृष्टिकोण के अनुसार, राष्ट्रीय हितों का विरोधी होने के कारण एक ऐसी बुराई बन गया, जिससे बचना आव"यक था। ''वर्गो के बीच टकराव को मानते हुए भी, उसे मिटाने का सही रास्ता शांतिपूर्ण विधियों से उसका अंत करना है, 1955 में उन्होंने कहा। वर्ग टकराव की विद्यमानता को अनिवार्यतः स्वीकार करते हुए उन्हाने इसका शांतिपूर्ण विधियों के समाधान का समर्थन किया। इसी लिये 1956 में नेहरू ने भूमि सुधार और दे"ाी रियासतों से एक संघ में एकीकरण को टकरावों के ऐसे समाधान के एक उदाहरण के तौर पर पे"ा किया।

उपर्युक्त वक्तव्यों से यह धारणा बनती है कि सैद्धांतिक तौर पर वर्ग संघर्ष को स्वीकार करते हुए नेहरू ने केवल उसके शांतिपूर्ण रूपों का ही समर्थन किया, अर्थात् वर्ग संघर्ष की स्थितियों पर बने रहते हुए उन्होने उसके परिसर को संकुचित और उसके साधनों को सीमित कर दिया। इस सिलसिले में प्रधान लिखते है ''सतर्क और जनवादी दृष्टिकोण के बावजूद, जो उनकी स्वातंत्रत्तोर रणनीति के मूल में है, जवाहरलाल नेहरू ने वर्ग संघर्ष की इस धारणा का अनुसरण किया। लेकिन शांतिपूर्ण और अहिंसात्मक विधि से उनकी प्रतिबद्धता वर्ग संघर्ष की धारणा को निहत्था कर देती है। प्रधान नेहरू के दृष्टिकोण के मुकाबले में एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण रखते है, जिसके अनुसार, जैसा कि उनका ख्याल है, वर्ग संघर्ष को अनिवार्यतः हिंसात्मक रूप ले लेना चाहिए।

(च) वर्ग सामंजस्य की प्राप्ति के तरीके पर विचार – नेहरू ने माना कि उद्योग में वर्ग संघर्ष को रोकने के लिए एक उपयुक्त मनोवैज्ञानिक वातावरण स्थापित करना तथा इन टकरावों के निपाटारे के लिए कोई क्रियाविधि बनाना आव"यक है। उनके अनुसार, एक बड़ी कठिनाई थी श्रमिकों और पूंजीपतियों के बीच संबंधों में अवि"वास तथा शत्रुता द्वारा जनित मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को हटाना। ओद्योगिक विवादों के शांतिपूर्ण निपटारे की उपर्युक्त क्रियाविधि का उद्दे"य सर्वप्रथम दोनों पक्षों के बीच समझौता कराना था। समझौता न हो सकने की हालत में विवाद विवाचनऔर निपटारे के लिए तीसरे पक्ष को सौंप दिया जाना था।

नया ''सहयोग का मनोविज्ञान'' विकसित करने के प्रयासों के बावजूद नेहरू ने अपने उस विचार को बिल्कुल नहीं छोड़ा, जो युद्ध–पूर्व अवधि में वर्गों पर उनकी धारणाओं के मूल में था। वह विचार यह था कि समाज में बड़े परिवर्तन वि"ोषाधिकारप्राप्त वर्ग द्वारा अपनी स्थिति के स्वैच्छिक परित्याग से नहीं होते। उन्होने इस बात से इंकार नहीं किया कि यह वर्ग अपनी सत्यता में यकीन करता है और कि गंभीर सुधार सिर्फ शोषितों के दबाव से ही लाये जा सकते है।43 नेहरू के अनुसार सभी टकराव सामान्य सांविधानिक तीरकों से सुलझाये जाने चाहिए। पर संवैधानि प्रक्रिया के होते हुए भी उन्होने सामाजिक कायापलट के पैमाने को जानबूझकर न्यून कर दिया। उनके शब्दों में, ''लेकिन याद रखें कि हम जिस दबाव का प्रयोग कर सकते है, उसकी भी एक सीमा है; दबाव की वांछनीयता के अतिरिक्त हमें सहमति से प्रत्येक व्यक्ति की सहमति से नहीं, बल्कि पूरे के पूरे समाज की सहमति से आगे बढ़ना चाहिए।

(छ) गाँधी की कार्यनीति की समीक्षा – नेहरू के विचार में, गांधीवादी कार्यनीति की एक मुख्य कमी यह थी कि उसने जनसाधरण को एक लंबे अर्से तक नि"चल रहने के लिए विव"ा कर दियाऔर क्रांतिकारी प्रक्रियाओं की गति"ीलता को कृत्रिमतः अवरूद्ध कर दिया, जिसने इस आंदोलन की अंतः प्रेरणा को स्पष्ट कर दिया। ''यह सर्वथा स्वाभाविक था,'' उन्होंने लिखा, ''क्योंकि जनता को एक लंबे समय तक एक नि"चित क्रांतिकारी अवस्था मेंबनाये रखना असंभव है। सामान्यतः यह कुछ दिनों का मामला था, लेकिन सविनय अवज्ञा के पास इस अवधि को कई महीनों तक खीचने तथा फिर उस पर एक अनि"चित अवधि तक निम्नतर स्तर पर चलते रहने की अद्भुत क्षमता थी।'' उन्होने जोर दिया कि ''सीधी कार्रवाइयों के रूप में संघर्ष क्रांतिकारी अवस्था में एक अत्यल्प काल तक ही बना रहा सकता है। वह नि"चल नहीं रह सकता; उसे या तो ऊपर

जाना होगा या नीचे।66 पर गांधी ने जो अपने विरोधियों से सीधे टकराने से बचते थे और जो दबाव के अतिवादी रूप (चाहे वे अहिंसा के दायरे में ही क्यों न हों) नहीं अपनाना चाहते थे, सभी कठिनाइयों के बावजूद आंदोलन को समरूप चाहते थे, सभी कठिनाइयों के बावजूद आंदोलन को समरूप अवस्था में बनाये रखने एवं उसे अपने सहज मार्ग पर आगे न बढ़ने देने की कोि"ा"ा की। इसने आंदोलन को नि"चल औरन पतनोन्मुख बना दिया।

(ज) सामाजिक क्रान्ति का समर्थन – नेहरू ने सामाजिक क्रांति को एक व्यापक अर्थ में लिया और उसे आमूल या तीव्र राजनीतिक परिवर्तनों या महली क्रांतियों से गड्डमड्ड नहीं किया। उन्होंने लिखा : ''सामाजिक क्रांति अन्य क्रांतियों से एक मूलतः भिन्न मामला है, जो सिर्फ सतही परिवर्तन लाती है। वह राजनीतिक क्रांति की भी अपेक्षा करती है, लेकिन यह इससे भी बड़ी चीज है, क्योंकि वह सामाजिक विरचना को बदल डालती है। मुक्ति आंदोलन के दौरन जनता के प्रति चिंता से उनका आ"ाय उसे केवल राजनीतिक क्रांति का स्वरूप ही नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का स्वरूप भी देने से था। उनके शब्दों में, ''सफल राष्ट्रीय क्रांति कम से कम विदे"ाी तत्वों को हटा देती है और उन्हें दे"ा में प्रधान तत्वों से प्रतिस्थापित कर देती है। लेकिन जो समाज के निचले स्तरों पर है, उन्हें इससे तब तक कम ही फायदा होगा, जब तक राष्ट्रीय क्रांति के साथ–साथ सामाजिक क्रांति भी न हो''।

नेहरू की क्रांतिकारिता उस समय राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में भी और सामाजिक प्र"न के समाधान के लिए संघर्ष में भी प्रकट हुई, जिन्हें उन्होने सघनतः संबंधित किया और जो जन–प्रतिवादों तथा जन–विद्रोहों से अविच्छेद्य थे। उन्होंने इन प्रतिवादों और विद्रोहों को ऐसी कार्रवाइयों के रूप में देखा, जिनमें अस्त्रों का प्रयोग नहीं किया गया। इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों नेहरू सभी प्रकार के सुधारवाद के इतने विरूद्ध थे, चाहे वह भारत में हों या किसी अन्य दे"ा में। लेकिन मानवजाति केइतिहास के वि"लेषण से और मार्क्सवादी विचारों के प्रभाव के तहत क्रांतिकी आव"यकता मेंवि"वास पर पहुंचकर भी नेहरू का अपनी प्रकृति और मनोद"ाा की बदौलत तीव्र और दृढ़ परिवर्तनों की ओर रूझान नहीं था। उनके विवेक की पुकार कुछ और थी, जबकि उनकी भावनाएं, उनकी रूचियों की पुकार कुछ और थी, जबकि उनकी भावनाएं, उनकी रूचियां और वैयक्तिक लगाव उन्हें किसी और ही दि"ाा में ले गये। यह चौथे द"ाक में ही प्रकट हो गया था, जब अपनी क्रांतिकारी और समाजवादी आस्थाओं की संपूर्ण सचाई और शक्ति के बावजूद नेहरू ने गांधी और कांग्रेस के साथ उनके सभी द्वुलमुलपनों तथा राजनीतिक छूटों में इस आ"ाा से हिस्सा बंटाया कि वह उन्हें प्रभावित कर सकेंगें। लेकिन तब भी उन्होंने टकराव, अडिग मुठभेड़ करने की बात कभी नहीं सोची, उनके साथ संबंधविच्छेद की तो बात ही क्या? युद्धोत्तर वर्षो में नेहरू की प्रकृति और उनकी राजनीतिक लाइन की वि"िाष्टताएं अधिकाधिक रूप में खुलकर प्रकट हुई और वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतरी संबधों तक ही सीमित न रही, बल्कि सामाजिक व राजनीतिक पूरे क्षेत्र में, जो स्वतंत्रता की परिस्थितियों में तेजी से फैल गया था, व्याप्त हो गयी।

पं0 जवाहर लाल नेहरू की आर्थिक विचारधारा :

भारत के किसानों से निकट सम्पर्क के कारण उनकी आंखों से एक पर्दा सा उठ गया। उन्होंने भारतीय समस्या का वह पहलू देखा जिसकर राष्ट्रवादियों ने प्रायः कोई ध्यान नही दिया था। ब्रुसेल्स सम्मेलन में उनकी भागेदारी और 1927 में सोवियत रूस जाने से इस विचार की की और पुष्टि हो गयी। 1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेसन में उन्होंने अपने को एक समाजवादी और गणतंत्रवादी घोषित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस ने अपने कराची अधिवेसन में समाजवाद की दि"ाा में एक अगला महत्वपूर्ण कदम उठाया। उसने मूल अधिकारों तथा आर्थिक नीति के विषय में एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें आधारभूत उद्योगों तथा सेवाओं खनिज साधनों, रेलवे, जलवाहनों तथा सार्वजनिक परिवहन के अन्य साधनों पर राज्य का स्वामित्व अथवा नियंत्रण होने का विचार दिया। 1936 में जवहर लाल नेहरू को पुनः कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। उनके अध्यक्षीय भाषण ने कांग्रेस के समाजवादी विचारों वाले सदस्यों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उसमें उन्होंने मध्य वर्गीय नेतृत्व पर यह आरोप लगाया कि वह एक ही समय में दो विभिन्न दि"ाओं में देख रहा था और ऐसा करके जनता को अपने मार्ग से विचलित कर रहा था। उन्होंने फिर कहा 'मेरा दृढ़ वि"वास है कि संसार की समस्याओं तथा भारत की समस्याओं का एकमात्र समाधान समाजवाद मे ही है और अब मैं इस शब्द का प्रयोग करता हूँ, तो मैं ऐसा एक अस्पष्ट मानवतावादी अर्थ में नही वरन वैज्ञानिक अर्थ में करता हूँ। उन्होंने फिर कहा भारत की जनता की दरिद्रता, भीषण बेरोजगारी, हीनता तथा

पराधीनता का अन्त करने के लिये मैं समाजवाद के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नही देखता। इसके लिये हमारे राजनीतिक तथा सामाजिक ढ़ाचे में एक महान और क्रान्तिकारी परिवर्तन होना भूमि तथा उद्योग में निहित हितो तथा सामन्तवादी और कुलीनतंत्रवादी भारतीय राजव्यवस्था का अन्त होना आव"यक है। इसका तात्पर्य है व्यक्तिगत सम्पत्ति का अन्त कर देना तथा वर्तमान लाभ प्रणाली के स्थान पर सहकारी सेवा का एक उच्चतर आद"ार प्रतिष्ठित करना। वस्तुतः जवाहर लाल नेहरू के मानस में समाजवाद ने जो रूप ग्रहण किया उसे लोकतंत्री समाजवाद कहा जाता है।

भारत की आर्थिक समस्या के समाधान में जवाहर लाल नेहरू ने जिस लोकतंत्री समाजवाद को अपनाया, उसका विकास एक बहुत लम्बी प्रक्रिया की उपज है। कैम्ब्रिज के अपने अध्ययन काल में वे फेबियन्स और समाजवादी विचारों की ओर आकृष्ट हुये। बाद में जब अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण तथा तद्जनित जनता की दुर्द"ाा के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क में आये तब फिर वह प्रज्वलित हो उठा। कालान्तर में वे कांग्रेस समाजवादी दल के प्रसिद्ध नेताओं जयप्रका"ा नारायण, आचार्य नरेन्द्रदेव, अच्युतपटवर्धन और मीनू मसाली सरीखे नेताओं के सम्पर्क में आये, यद्यपि वे उसमें सम्मिलित नही हुये। संक्षेप में उनकी आर्थिक विचारधारा के अन्तर्गत निम्नवत पहलुओं पर वि"ोष बल दिया गया था।

(क) आर्थिक नियोजन के प्रति झुकाव – वर्ष 1938 में जब सुभाषचंद्रबोस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने तब दे"ा में जावाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में राष्ट्रीय नियोजन समिति ;छंजपवदंस ब्संददपदहद्ध की नियुक्त की गयी। हालाकि उस समय उनके सामने पर्याप्त तथ्य और आंकड़े नही थे किन्तु उन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति नियोजन के लिये आव"यक पूर्व"ार्त मानी गयी और यह घोषित किया गया कि समिति का उद्दे"य जनता के भीषण दारिद्रय को दूर करना और जनसाधारण के लिये व्यक्तिगत लाभ के उद्दे"य का अंत करके न्यायपूर्ण वितरण पर बल देना है और बड़े बड़े उद्योगपतियों के व्यक्तिगत लाभ को सुरक्षित रखना भी है। उस समय यह भी समस्या थी कि भारी उद्योगों का पक्ष लिया जाय या कुटीर उद्योगों पर बल दिया जाय। इसीतरह खेती तथा उद्योग के सापेक्षिक महत्व की समस्या थी।

(ख) मिश्रित्र अर्थव्यवस्था का समर्थन : जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय परिस्थिति को ध्यान में रखते हुयें दे"ा की आर्थिक प्रगति का रास्ता नि"चित किया। उन्होंने सार्वजनिक उद्योग और निजीउद्योग दोनों ही क्षेत्रों का सहयोग लेने लिये मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति अपनायी। मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक उद्योग और निजीद्योग दोनो के क्षेत्र नि"चित होते हैं और दोनों साथ–साथ चलते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र उस क्षेत्र को कहते हैं जिसमें उद्योगों के ऊपर राज्य का स्वामित्व और नियंत्रण रहता है जबकि निजीक्षेत्र वह है जिसमें उद्योगों के ऊपर व्यक्तिगत अधिकार रहता है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में प्रतिरक्षा से सम्बन्धित समस्त उद्योग और समस्त आधारभूत भारी उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं इसके दायरे में उन्होंने शस्त्रास्त्र, अणु"ाक्ति वायुयान, जलयान तार टेलीफोन लोहा इस्पात कोयला खनिज पदार्थ अणु"ाक्ति रेलवे आदि को रखा। शेष के विषय में यह निर्णय किया गया कि मौजूदा कल–कारखानों को तो निजी क्षेत्र में ही रहने दिया जाय किन्तु नये कारखाने स्थापित करने का अधिकार सरकार के लिये सुरक्षित रखा जाये।

(ग) लोकतंत्र के आर्थिक पक्ष पर बल – जवाहर लाल नेहरू ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत में केवल राजनीतिक लोकतंत्र से ही काम नही चलेगा अर्थात केवल मताधिकार प्राप्त कर लेने से ही कोई व्यक्ति सार्वजनिक जीवन में अपनी भूमिका अदा करने के लिये समर्थ नही हो जाता। उनका मत था कि एक भूखे व्यक्ति के लिये मताधिकार का कोई वि"ोष महत्व नही होता। अतः निर्धन व जनसामान्य को सुखी जीवन व्यतीत करने के लिये समुचित अवसरों का मिलना आव"यक है। इसके लिये जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रीय धन के न्यायपूर्ण वितरण पर बल दिया और समाज के भीतर पाये जाने वाले वर्ग–भेदों को मिटाने पर ध्यान दिया। वे चाहते थे कि ि"ाक्षित और निरक्षर के बीच विद्यमान खाई की पाटा जाय।

(घ) निर्धनता निवारण पर बल – जवाहर लाल नेहरू न केवल राष्ट्रीय सम्पत्ति के वितरण में घोर विषमताओं को दूर करना चाहते थे बल्कि जनसमस्या की गरीबी से भी व्यथित थे। उन्होंने कहा 'यदि आप चाहें तो समाजवाद अथवा साम्यवाद आपकी मौजूदा धन के वितरण में सहायता दे सकता है परन्तु भारत में तो वितरित करने के लिये को धन है ही नही। यहां तो बांटने के लिये केवल दरिद्रता है। प्र"न कुछ धनी व्यक्तियों की सम्पत्ति के वितरण का नही है। इससे हमारी राष्ट्रीय आय में कोई अन्तर नही आ सकता। कदाचित इससे कुछ मनोवैज्ञानिक लाभ हो सकता है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से भारत में

वितरण के लिये अधिक नही है क्योंकि हमारा दे"ा गरीब है। हमें धन उत्पन्न करना चाहिये और तब उसका न्यायपूर्ण वितरण करना चाहिये। इसलिये हमारी आर्थिक नीति का लक्ष्य दे"ा को समृद्ध बनाना होना चाहिये। अब तक आर्थिक नीतियों का आधार बहुधा अभाव रहा है परन्तु आज के संसार मे अभाव के अर्थ"ाास्त्र का कोई अर्थ नही है।

(ड.) मार्क्सवाद का मूल्यांकन – जवाहर लाल नेहरू ने अपनी आर्थिक विचारधारा के निर्माण में मार्क्स के विचारो का गहन अध्ययन किया था कार्लमार्क्स में उनको इतिहास का एक द"ान मिला जिससे उन्हें इतिहास व सामायिक विषयों को नवोन प्रका"ा में देखने में सहायता मिली। उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन करके सामाजिक समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त किया और जनसामान्य के प्रति एक नैतिक संवेदना की अनुभूति की। परन्तु मार्क्सवाद को उन्होने भारतीय परिस्थितियों के प्रति उपयुक्त नही पाया उनके अनुसार मार्क्स के समय से अबतक जो परिवर्तन हुये हैं उनमें एक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना हो गयी है, जिसके अन्तर्गत शान्तिपूर्ण परिवर्तन होना सम्भव है। उनके चरित्र में व्यक्तिवाद की एक गहरी रेखा ने तथा हिंसा के प्रति घृणा ने उनका मार्क्सवादी नही बनने दिया।

(च) गाँधीवाद की समीक्षा – जवाहर लाल नेहरू की आर्थिक विचारधारा के निर्माण में महात्मा गाँधी का अत्यधिक प्रभाव है। जवाहर लाल नेहरू एक ऐसे समाजवादी समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमे मानव गरिमा, मूल्य का महत्त्व हो और हिंसा के लिये कोई भी स्थान न हो। ऐसी स्थिति में वे गाँधी जी के विचारों की तरफ आकृष्ट हुये। समय जैसे जैसे बीतता गया वे मार्क्सवाद से दूर होते गये और गाँधीवाद से प्रभावित होते गये। उन्होंने महसूस किया कि हमारे साधन भी उतने ही अच्छे होने चाहिये जितना कि साध्य और यह कि अनैतिक साधन साध्य को भी विकृत कर देते हैं। उन्होंने यह भी देखा कि गाँधी जी की कार्यपद्धति में अतीत के साथ सामंजस्य बना रहता है और वे सदैव उस सामाजिक ढांचे के अन्तर्गत कार्य करने का प्रयास करते थे जिसमें कि जन सामान्य शताब्दियों से रह रहे थे। वे अपने राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष के लिये मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को एक आधार के रूप में स्वीकार करते थे। उन्हें धनियों के हृदय परिवर्तन में संदेह था किन्तु वे उस क्रान्तिकारी परिवर्तन से बहुत अधिक प्रभावित हुये थे जो कि गाँधी जी ने जनमानस में कर दिया था। वर्ग संघर्ष के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि हमारा वि"वास है कि अन्ततः इसका निराकरण करने का सर्वोत्तम साधन शांतिपूर्ण उपायों तथा मैत्रीपूर्ण दृष्टिकोण को अपनाना ही है। जवाहर लाल नेहरू ने श्रम और पूँजी के सामंजस्य पर भी बल दिया। इसके बावजद नेहरू न तो गाँधी जी की अहिंसा के सिद्धान्त को स्वीकार कर सके और न ही ट्रस्टी"िाप के सिद्धान्त में वि"वास कर सके। अपनी आत्म कथा में उन्होंने लिखा है कि भूतकाल में एक शासक तथा वि"ोषधिकार सम्पन्न वर्ग को अपने अन्यायपूर्ण अधिकारों तथा सत्ता का परित्याग करन के लिये प्रेरित करने के प्रयास विफल रहे है।

(छ) जवाहर लाल नेहरू का समाजवादी समाज – जवाहर लाल नेहरू ने आर्थिक समस्या का गहरा अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि समाजवाद स्वयं में कोई साध्य नही है वरन वह तो उच्चतर साध्य की प्रप्ति का साधन है। साध्य तो है जनसामान्य की निर्धनता को दूर करना, उनके विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं को हटाना, राष्ट्रीय धन के वितरण में व्याप्त भयंकर विषमताओं को कम करना और प्रत्येक की उन्नति के लिये अवसर प्रदान करना। अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये नेहरू ने धीरे–धीरे प्रगति को उपयुक्त माना। उन्होंने इसकी प्राप्ति के लिये जनतंत्रात्मक पद्धति को उपयुक्त माना। उनके अनुसार समाजवाद की प्राप्ति जनतंत्र के ढांचे में ही की जा सकती है। उनकी यह भी मान्यता थी कि समाजवादी समाज की रचना में समाज के समस्त वर्गो का सहयोग प्राप्त करना चाहिये उनके समाजवादो दृष्टिकोण में निरन्तर प्रसरित होने वाले सार्वजनिक क्षेत्र और कुटीर उद्योगों के लिये महत्त्वपूर्ण स्थान था।

उपसंहार

जवाहर लाल नेहरू एक ऐसे समाजवादी समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें व्यक्ति लाभ के उद्दे"य के स्थान पर सामाजिकहित और प्रतिस्पर्धा की भावना क स्थान पर सहयोग की भावना प्रतिष्ठित होगी। इस तरह वे मार्क्स और गाँधी के परस्पर विरोधी विचारों के बीच मार्ग का अनुसरण करते प्रतीत होते हैं। वे साम्यवादियों के इस विचार से सहमत थे कि राज्य शक्ति के प्रयोग से ही सामाजिक और आर्थिक जीवन को पुनर्गठित किया जा सकता है। इसके साथ ही वे गाँधी जी के इस विचार को भी स्वीकार करते थे कि राज्य शक्ति का प्रयोग यथा संभव शांतिपूर्ण ढंग से किया जाना चाहिये। नेहरू ने

जमीदार ताल्लुकेदार, राजा व महाराजा की समस्याओ का समाधान भी इसी शांतिपूर्ण ढंग से किया था। परन्तु नेहरू इस पद्धति की सीमाओं को भी जानते थे। इसीलिए उन्होंने भारत में समाजवाद लाने के लिये हृदय परिवर्तन की अपेच्छा राजसत्ता के प्रयोग की उचित माना क्योंकि उनका यह दृढ़ नि"वास था कि कोई भी वि"ोषाधिकार सम्पन्न वर्ग बिना प्रभावी दबाव के अपनी प्रभुतापूर्ण स्थिति का परित्याग नही कर सकता। इसके बावजूद वे सर्वाधिकारवादी पद्धति को उसके समग्र रूप में स्थापित करने की बात सोच भी नही सकते थे। उन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों में गहरी निष्ठा थी और मानव के व्यक्तित्व के विकास में आस्था रखते थे। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पं0 जवाहर लाल नेहरू ने भारत की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के निराकरण के लिये गम्भीरतापूर्वक ध्यान दिया। अतः वे किसी स्पष्ट विचारधारा से बंधकर नहीं रहे। इसके बावजूद यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सामाजिक व आर्थिक समस्याओं के निराकरण में उन्होंने लोक कल्याणकारी, समग्र सुधरवादी और लोकतांत्रिक समाजवादी पद्धति को स्वीकार किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. Shridharni, Krishan Lal, and War without Violence: A Study of Gandhis's Method and Its Accomplishments, Bombay: Bharatiya Vidya Bhavan, 1962.
[2]. Sitaramayya, Pattabhi, History of Indian National Congress, 1885-1935, Volume I, Delhi: S. Chand & Company, 1969.
[3]. Sitaramayya, Pattabhi, History of India National Congress, 1935-47, Volume II, Bombay: Padma Publications Ltd., 1947.
[4]. Sitaramayya, Pattabhi, Gandhi and Gandhism, Allahabad: Kitabistan, 1942, in 2 volumes.
[5]. Tara Chand, History of the Freedom Movement in India, New Delhi: Publications Division, Ministry of Information.
[6]. Gandhi Marg New Delhi, Gandhi Peace Foundation).
[7]. Harijan: A Journal of Applied Gandhism, 1933-55 (in 19 volumes) (New York and London: Garland Publishing, Inc., 1973).
[8]. Journal of Gandhian Studies (Allahabad: Gandhi Bhawan, University of Allahabad).
[9]. Modern Review: A Monthly Review and Miscellany (Calcutta: The Modern Review office, 1935).
[10]. Sarvodaya (Tirupur: Tamilnadu Sarvodaya Sangh).